भारत सरकार
खान मंत्रालय
भारतीय खान ब्यूरो
खान नियंत्रक (पूर्वांचल) का कार्यालय

Government of India
Ministry of Mines
Indian Bureau of Mines
Office of the Controller of Mines (EZ)

सं. ई-11/1/2022-आईबीएम-ईजेड

दिनांक : 10.09.2026

सेवा में,
राजभाषा अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो
नागपुर।

विषय: हिन्दी साहित्यकार की जयंती का आयोजन।

महोदय,

भारतीय खान ब्यूरो, कोलकाता आंचलिक कार्यालय में, प्रत्येक माह एक हिन्दी साहित्यकार की जयंती मनाने की श्रृंखला में दिनांक 09.09.2026 को आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** जी की जयंती का आयोजन किया गया। इस संबंध में तस्वीरों के साथ रिपोर्ट कृपया आपके सूचनार्थ संलग्न पायें।

हिंदी अनुभाग
भारतीय खान ब्यूरो
डायरी संख्या 470
दिनांक 15/09/2026

भवदीय,

संलग्नक - यथोपरि।

Digitally signed by
Pukhraj Nenival
Date: 10-09-2026
17:58:46

**(डा. पुखराज नेणिवाल)**
खान नियंत्रक (पूर्वांचल)

प्रतिलिपि प्रेषित:-

1. उप निदेशक, राजभाषा कार्यान्वयन पूर्व का कार्यालय, 234/4, आचार्य जगदीश चन्द्र बोस रोड, कोलकाता ।

2. अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय - 4) दामोदर घाटी निगम, डीवीसी टावर्स, वी आई पी रोड, कोलकाता - 700054.

पता - सीपी - 13, सेक्टर - 5, सॉल्टलेक सिटी, कोलकाता - 700091
Address - CP – 13, Sector – 5, Saltlake City, Kolkata - 700091
दूरभाष/Telephone : 033 23673986 / 23673618, ई – मेल/E-mail : zo.kol@ibm.gov.in

# <u>प्रत्येक माह एक साहित्यकार की जयंती कार्यक्रम</u>

प्रत्येक माह एक साहित्यकार की जयंती कार्यक्रम श्रृंखला में दिनांक **09 सितम्बर 2026** को भारतीय खान ब्यूरो, कोलकाता कार्यालय के तत्वाधान में हिंदी साहित्य के युगप्रवर्तक एवं आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** जी की जयंती के अवसर पर श्रद्धापूर्वक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** जी के साहित्यिक योगदान, हिंदी भाषा के विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका तथा हिंदी के प्रति उनके समर्पण से कार्मिकों को परिचित कराना था।

इस अवसर पर **श्री चन्दन, प्रवर श्रेणी लिपिक** द्वारा **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** जी के जीवन एवं साहित्य पर आधारित पावर प्वाईंट प्रस्तुति दी गई। प्रस्तुति के माध्यम से उनके जीवन-परिचय, साहित्यिक योगदान, प्रमुख रचनाओं, पत्रकारिता, नाट्य-साहित्य तथा हिंदी के विकास में उनके योगदान को क्रमबद्ध एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया। उनकी प्रमुख कृतियों **'अंधेर नगरी'**, **'भारत दुर्दशा'** आदि के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों, राष्ट्रीय चेतना तथा सामाजिक जागरूकता के उनके संदेश को रेखांकित किया गया। इस प्रस्तुति में उनके साहित्य की विशेषताओं एवं आधुनिक हिंदी साहित्य के विकास में उनके योगदान को भी चित्रों एवं प्रमुख तथ्यों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया।

**सुश्री अस्माउल होसना तथा सुश्री देवदत्ता घोष, एम.टी.एस.** ने भी अपने वक्तव्य में **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** जी के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला।

इसके पश्चात **साहित्यिक सत्र में -**

**श्री सौरभ दास, कनिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी** द्वारा ***"भारत दुर्दशा"***

**श्री विभूति नन्दन तिवारी, प्रवर श्रेणी लिपिक** द्वारा ***"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल"***

**श्री आयुष्मान गोसाईं, आशुलिपिक** द्वारा **"दुनिया में हाथ - पैर हिलाना नहीं अच्छा"**

**श्री मानू माजी, स्टाफ कार ड्राईवर** द्वारा **"गले मुझको लगा लो ऐ दिलदार होली में"**

**श्रीमती एकता गिरि, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी** द्वारा ***"पर्दे में कैद औरत की गुहार"*** कविताओं/गजल का सस्वर पाठ किया गया।

**श्री उदय कुमार पोअल, सहायक खनन अभियंता** ने अपने वक्तव्य में कहा कि **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** जी एक महान लेखक, कवि और पत्रकार थे तथा हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने में उनका

# <u>प्रत्येक माह एक साहित्यकार की जयंती कार्यक्रम</u>

प्रत्येक माह एक साहित्यकार की जयंती कार्यक्रम श्रृंखला में दिनांक **09 सितम्बर 2026** को भारतीय खान ब्यूरो, कोलकाता कार्यालय के तत्वाधान में हिंदी साहित्य के युगप्रवर्तक एवं आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** जी की जयंती के अवसर पर श्रद्धापूर्वक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** जी के साहित्यिक योगदान, हिंदी भाषा के विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका तथा हिंदी के प्रति उनके समर्पण से कार्मिकों को परिचित कराना था।

इस अवसर पर **श्री चन्दन, प्रवर श्रेणी लिपिक** द्वारा **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** जी के जीवन एवं साहित्य पर आधारित पावर प्वाईट प्रस्तुति दी गई। प्रस्तुति के माध्यम से उनके जीवन-परिचय, साहित्यिक योगदान, प्रमुख रचनाओं, पत्रकारिता, नाट्य-साहित्य तथा हिंदी के विकास में उनके योगदान को क्रमबद्ध एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया। उनकी प्रमुख कृतियों **'अंधेर नगरी'**, **'भारत दुर्दशा'** आदि के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों, राष्ट्रीय चेतना तथा सामाजिक जागरूकता के उनके संदेश को रेखांकित किया गया। इस प्रस्तुति में उनके साहित्य की विशेषताओं एवं आधुनिक हिंदी साहित्य के विकास में उनके योगदान को भी चित्रों एवं प्रमुख तथ्यों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया।

**सुश्री अस्माउल होसना तथा सुश्री देवदत्ता घोष, एम.टी.एस.** ने भी अपने वक्तव्य में **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** जी के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला।

इसके पश्चात **साहित्यिक सत्र में -**

**श्री सौरभ दास, कनिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी** द्वारा ***"भारत दुर्दशा"***

**श्री विभूति नन्दन तिवारी, प्रवर श्रेणी लिपिक** द्वारा ***"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल"***

**श्री आयुष्मान गोसाईं, आशुलिपिक** द्वारा **"दुनिया में हाथ - पैर हिलाना नहीं अच्छा"**

**श्री मानू माजी, स्टाफ कार ड्राईवर** द्वारा **"गले मुझको लगा लो ऐ दिलदार होली में"**

**श्रीमती एकता गिरि, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी** द्वारा ***"पर्दे में कैद औरत की गुहार"*** कविताओं/गजल का सस्वर पाठ किया गया।

**श्री उदय कुमार पोअल, सहायक खनन अभियंता** ने अपने वक्तव्य में कहा कि **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** जी एक महान लेखक, कवि और पत्रकार थे तथा हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने में उनका

महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों को उजागर किया और लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया।

**श्री पोअल** ने **भारतेन्दु** जी की प्रसिद्ध पंक्ति **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल"** का उल्लेख करते हुए कहा कि अपनी भाषा का विकास देश के विकास से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा कि आज के समय में भी **भारतेन्दु जी** के विचार हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। हमें अपनी भाषा का सम्मान करना चाहिए और अपने शब्दों एवं अभिव्यक्ति का उपयोग अच्छे कार्यों तथा समाज की भलाई के लिए करना चाहिए।

इस अवसर पर **डॉ. सुनील कुमार झा, अधीक्षण खनन भूविज्ञानी** ने अपने विचार व्यक्त करते हुए **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** जी के साहित्यिक योगदान और हिंदी भाषा के प्रति उनके समर्पण को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि **भारतेन्दु** जी ने अपने समय की सामाजिक एवं राष्ट्रीय परिस्थितियों को साहित्य के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया और हिंदी को जनजागरण का सशक्त माध्यम बनाया। उन्होंने कार्मिकों को प्रेरित करते हुए कहा कि हिंदी का वास्तविक विकास तभी संभव है, जब हम इसे अपने दैनिक व्यवहार और कार्यालयीन कार्यों में सहजता एवं आत्मविश्वास के साथ अपनाएँ। उन्होंने हिंदी साहित्य के अध्ययन, पठन-पाठन और रचनात्मक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता को प्रोत्साहित किया तथा **भारतेन्दु** जी के विचारों को वर्तमान समय में भी प्रासंगिक बताया।

इस अवसर पर **कार्यालयाध्यक्ष डॉ. पुखराज नेणिवाल, खान नियंत्रक (पूर्वांचल)** ने अपने संबोधन में **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी** के व्यक्तित्व और कृतित्व के विभिन्न आयामों पर प्रभावशाली ढंग से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** जी केवल एक साहित्यकार नहीं थे, बल्कि वे ऐसे युगद्रष्टा थे जिन्होंने साहित्य को समाज के जागरण, राष्ट्र की चेतना और जनमानस की आवाज बनाने का कार्य किया। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों को स्वर दिया तथा लोगों को अपनी भाषा, अपनी संस्कृति और अपने देश के प्रति जागरूक किया।

**डा. नेणिवाल** ने कहा कि **भारतेन्दु** जी का सबसे बड़ा संदेश यह था कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी पहचान, संवेदना और आत्मसम्मान का आधार है। उनकी प्रसिद्ध उक्ति ***"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल"*** आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हिंदी का सम्मान केवल हिंदी दिवस या हिंदी पखवाड़े तक सीमित न रहकर हमारे दैनिक व्यवहार और कार्यालयीन कार्य-संस्कृति का हिस्सा बनना चाहिए।

उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव के बीच अपनी भाषा को आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, तकनीक और प्रशासन से जोड़ना समय की आवश्यकता है। हिंदी को आगे बढ़ाने का सबसे प्रभावी तरीका उसका अधिकाधिक सहज, सरल और स्वाभाविक

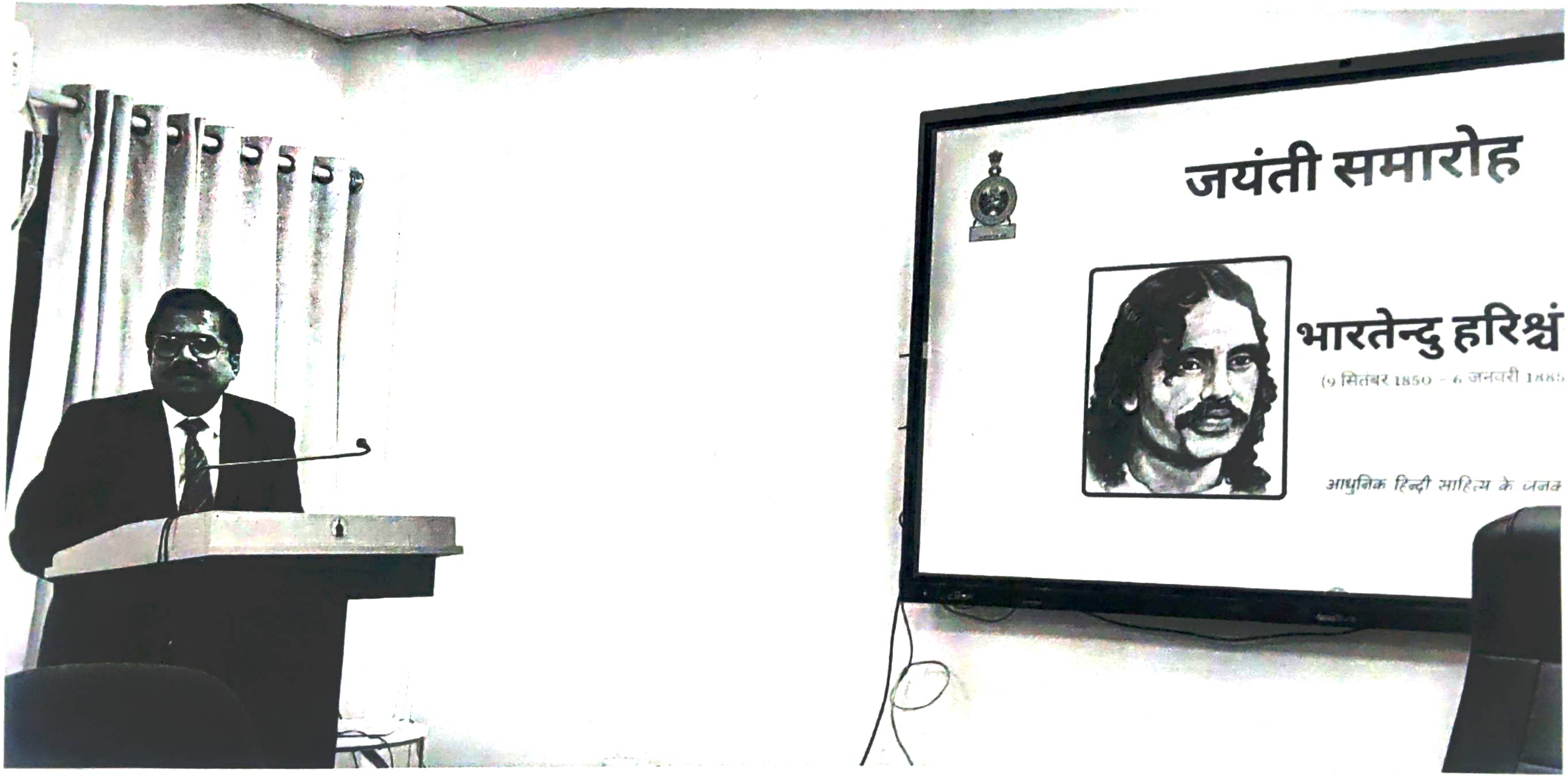
जयंती समारोह
भारतेन्दु हरिश्चं
(9 सितंबर 1850 - 6 जनवरी 1885
आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक